

Name- Anil Kumar
Dept of Pol. Science
Adarsh College Rajshahar

Paper - DSE - 4 (A)
(Indian foreign policy)

Lesson - 2

Q. भारत की विदेश नीति के प्रमुख निर्धारक तत्वों का उल्लेख करें ?
श्रुतिका :-

एक राज्य अन्य राज्यों के साथ किस प्रकार संबंध रखकर अपना राष्ट्रीय हित प्राप्त करता है, यही किसी भी देश की विदेश नीति का मुख्य प्रयोजन होता है।

दूसरे शब्दों में - एक राज्य जब दूसरे राज्य से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित करता है, विदेश नीति कहलाता है।
* श्लोक हिल के अनुसार :-

“विदेश नीति अन्य देशों के साथ अपने हितों को बढ़ाने के लिए किये जाने वाले किसी राष्ट्र के प्रयासों का समुच्चय है”

* स्लाइडर के शब्दों में :-
“अपने एक व्यापक अर्थ में विदेश नीति उन उद्देश्यों योजनाओं तथा क्रियाओं का सांस्कृतिक रूप है जो एक राज्य अपने बाह्य सम्बंधों को संचालित करने के लिए करता है।”

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि विदेश नीति राज्यों की गतिविधियों का एक व्यवस्थित रूप है, जिसका विकासकालीन अनुभव के आधार पर राज्य द्वारा किया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा होती है।

विदेश नीति के निर्धारक तत्व

एक देश की विदेश नीति को निर्धारित रूप प्रभावित करने वाले अनेक कारक या तत्व महत्वपूर्ण हैं जिससे किसी भी देश की विदेश नीति प्रभावित होती रहती है। इन निर्धारक तत्वों को हम इस प्रकार समझ सकते हैं -

(1) भू-राजनीति :-

एक देश की अवस्थिति एवं भौतिक स्थलाकृति उस राज्य की विदेश नीति पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। प्राकृतिक सीमाओं की उपस्थिति एक देश को सुरक्षा का भाव प्रदान करता है जो शांतिपूर्ण समय में धरतु विकास पर ध्यान दे सकता है।

(2) सैन्य क्षमता :-

सन्ततों में बल प्रयोग अंतिम मौर पर किया जाता है, लेकिन जिस देश के पास भारी और सुसज्जित सैन्य बल होता है उसे विश्व स्तर पर अन्य देशों से अधिक सम्मान प्राप्त होता है। उस प्रकार सैन्य क्षमता विदेश नीति निर्णय का एक प्रमुख और महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। एक सैन्य रूप से सशक्त देश अन्तः अक्षम देश की तुलना में कठोर निर्णय ले सकता है।

(3) आर्थिक शक्ति :-

आर्थिक रूप से मजबूत देश की विदेश नीति अन्य देशों की अपेक्षा बेहद प्रगामी होती है। आज कोई भी देश बेहद कमजोर अपनी सैन्य क्षमता की वजह से नहीं अपितु आर्थिक कमजोरी के कारण कहा या माना जाता है। आर्थिक रूप से मजबूत देश की विदेश नीति अन्य की अपेक्षा महत्वपूर्ण होता है और स्वशक्त देश अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना क्वॉसव बनाये रखता है। किसी भी देश की सैन्य शक्ति आर्थिक क्षमताओं पर ही निर्भर करती है।

(4) नेतृत्व क्षमता :-

किसी भी देश की विदेश नीति के निर्धारक तत्वों में नेतृत्व क्षमता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक स्वशक्त व्यक्तित्व अपने हित को ध्यान में रखकर विदेश नीति का निर्माण करता है। नेतृत्व क्षमता के कारण कोई भी कमजोर राष्ट्र भी अन्य की तुलना में बेहतर प्रदर्शन का मद्दा रखता है।

(5) सरकार का स्वभाव :-

किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनमत, दबाव समूह एवं जनसंचार की नीति निर्माण की प्रक्रिया में एक बड़ी भूमिका होती है। लोकतांत्रिक राज्यों में निर्बल व्यवस्था भी विदेश नीति निर्माण में प्रभाव रखती है। जिसका सरकार आमजनों से होता है। एक निरंकुश व्यवस्था में सारे निर्णय एक शासक के अनुसार होते हैं वे ऐसी नीति या निर्णय लेते हैं जैसा

के राज्य के हित में सही समझे हैं।

(6) आंतरिक बाह्यताएँ :-

न केवल अंतर्राष्ट्रीय घटनाएँ अपितु घरेलू घटनाक्रम भी विदेश नीति के स्वरूप के तौर पर कार्य करता है। एक उदाहरण है जब शासकों के विदेश में घरेलू उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कठोर एवं सशक्त विदेश नीति संबंधी निर्णय लिए हैं। उदाहरणार्थ :- देश में निर्वाचन परिणामों को प्रभावित करने या फिर देश को नाजुक आर्थिक हालात से लोगों का ध्यान हटाने के लिए रूस किया गया है।

(7) आतंकवाद :-

विदेश नीति को प्रभावित या निर्धारित करने वाले तत्वों में आतंकवाद भी एक महत्वपूर्ण तत्व बन गया है। सीमा पार आतंकवाद ने सभी विकसित या विकासशील देशों की विदेश नीति में आपत्तिलय परिवर्तन देखने को मिलता है। वैश्विक स्तर पर आतंकवाद की नुकुरीतिय देश की विदेश नीति को प्रभावित करती है।

(8) जलवायु परिवर्तन :-

जलवायु परिवर्तन भी वर्तमान समय में किसी भी देश की विदेश नीति के प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

(v) नौव दृष्टिकार :-

वर्तमान परिदृश्य में उसका प्रचलन देवक को मिल रहा है। जहाँ पूर्व में अस्त शस्त से मुक्त होते थे वही अब अदृश्य नैतिक दृष्टिकार के किली ली देश की विदेश नीति निर्माण को बदलकर रख दिया है।

X

Anil Kumar

7004461343